महाराजाधिराज सर डॉ॰ कामेश्वर सिंह जी की प्रतिमा के अनावरण एवं परीक्षाभवन तथा अन्तःक्रीड़ाशाला के उद्घाटन समारोह मे महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–6 जनवरी, 2017 समय–2:30 बजे, स्थान–दरभंगा)

महाराजाधिराज सर डॉ॰ कामेश्वर सिंह जी की प्रतिमा के अनावरण एवं परीक्षा भवन तथा अन्तः क्रीड़ाशाला के उद्घाटन–समारोह मे प्रमुख रूप से उपस्थित दरभंगा के नगर विधयक श्री संजय सरावगी जी, महापौर श्री गौरी पासवान जी, ललित नरायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति डॉ॰ साकेत कुशवाहा जी, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलपति डा॰ नीलिमा सिन्हा जी, विश्वविद्यालय के अधिषद्, अभिषद् एवं विद्वत्–परिषद के सदस्यगण, आमंत्रित अतिथिगण, शिक्षक एवं छात्रागण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों। प्राचीनकाल से ही ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सुविख्यात इस मिथिला की पवित्रा भूमि पर दरभंगा में आयोजित महाराजाधिराज डॉ॰ सर कामेश्वर सिंह जी की प्रतिमा के अनावरण एवं नवनिर्मित परीक्षाभवन तथा अन्तः क्रीड़ाशाला के उद्घाटन–समारोह में उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर सर्वप्रथम मैं विश्वविद्यालय के कुलपति सहित समस्त कर्मियों को इस पुनीत कार्य के लिए साधुवाद देता हूँ।

विशाल भूखंड, भवन एवं पुस्तकालय का दान देनेवाले महाराजाधिराज की आदमकद प्रतिमा की विश्वविद्यालय–परिसर में स्थापना, उनके प्रति हमारी एक सच्ची श्रद्धांजलि है। मैं अपनी ओर से महाराजाधिराज की समृति को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

दरभंगा राज–परिसर समस्त मिथिला की अमूल्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें दो–दो विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा के क्षेत्रा में अनवरत ज्ञान–विज्ञान की ज्योति प्रकाशित करने के लिए प्रयासरत हैं। पूरे परिसर में अवस्थित देवी–देवताओं के अनेक मंदिर, मस्जिद एवं मजार, भारत के सर्वधर्म–समभाव की संस्कृति का परिदर्शन कराते हैं।

मित्राों! अपनी विद्या के बल से ही दरभंगा–राज विश्व–विख्यात रहा है। दरभंगा में वर्तमान चिकित्सा महाविद्यालय, मिथिला संस्कृत शोधसंस्थान, आयुर्वेद महाविद्यालय एवं दोनों विश्वविद्यालय –इसी की दानशीलता के परिणाम हैं। इस राज के अन्तिम महाराजाधिराज ने मिथिला के समग्र विकास हेतु अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त, इनके द्वारा चीनी मिल, जूट मिल, अशोक पेपर मिल की स्थापना के साथ–साथ, 'आर्यावर्त' एवं 'इण्डियन नेशन' जैसे दैनिक समाचार पत्राों का प्रकाशन, गरीबों एवं अनाथों के लिए 'पूअर होम' की स्थापना, राज अस्पताल का निर्माण आदि कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए। स्वतंत्राता–आन्दोलन में भी महाराजा का योगदान अविस्मरणीय है।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम–1960 ई॰ के द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह की अपूर्व दानशीलता एवं संस्कृत शिक्षा–प्रेम का जीता–जागता उदाहरण है। महाराजा की भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा के फलस्वरूप, बिहार के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति डा॰ जाकिर हुसैन, तत्कालीन मुख्यमंत्राी बिहार–केशरी डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह तथा शिक्षामंत्राी कुमार गंगानन्द सिंह के सत्प्रयासों से, प्राच्च–विद्या के संरक्षण एवं संवद्धन हेतु यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। सम्प्रति यह विश्वविद्यालय शबिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम–1976 के अधीन ही अन्य विशविद्यालयों के साथ संचालित हो रहा है, तथापि अधिनियम में यथास्थान इसके लिए विशिष्ट प्रावधन किए गए हैं।

मित्राों! हमारी भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृत भाषा तथा इसका विशाल एवं प्राचीनतम साहित्य आज के युग में भी पूर्ण प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व के ज्ञान एवं विज्ञान के सम्पूर्ण विषय संस्कृत वाग्मय में समाहित हैं। संस्कृत– के वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रंथ, एक ओर जहाँ वैज्ञानिकों को नई खोज में सहायता करने में सक्षम हैं, वहीं परवर्ती साहित्य–सर्जना में भी

इनका अमूल्य योगदान है। भारत की एकता एवं अखंडता को कायम रखने वाले सद्विचार इस भाषा एवं साहित्य में सर्वत्रा विद्यमान हैं, जिनका स्मरण एवं मनन कर, हम पूरे विश्व में शांतिदूत के रूप में पुनः अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। संस्कृत साहित्य में समस्त मानव–समुदाय के सुख, स्वास्थ्य, कल्याण एवं आनंद की कामना की गई है और कहा गया है–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।''

महात्मा गाँधी ने मानव के मानसिक, शारीरिक एवं आत्मिक विकास को दृष्टि में रखते हुए, शिक्षा को परिभाषित किया है तथा लिखा है कि फशिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जो मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूप को प्रस्पफुरित कर दे।'' डा॰ राधकृष्णन ने भी मनुष्य के बौद्धिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक एवं शारीरिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य माना है।ष स्पष्ट है, शिक्षा का उद्देश्य जीविकोपार्जन से कहीं अधिक, देश और समाज के नव–निर्माण हेतु एक चरित्रावान, आत्म–अनुशासित, निर्भय, स्वाभिमानी, शौर्यवान और दृढ़निश्चयी युवकों का निर्माण है।

भारतीय संस्कृति के तत्त्व संस्कृत साहित्य में पूर्णतः सुरक्षित हैं। यही कारण है कि सैकड़ों वर्षों के विदेशी शासन एवं आक्रमण को झेलते हुए भी, यह आज भी हमारे रक्त में विद्यमान है तथा हम शांति एवं सद्भाव का पाठ समस्त विश्व को पढ़ाने में सक्षम हैं।

आपका संस्कृत विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के संवद्धन हेतु गंभीरतापूर्वक प्रयासरत है, यह संतोष की बात है।

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृतभाषा का संरक्षण हम सबका परम कर्त्तव्य है। वस्तुतः जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई एवं महाराजाधिराज ने अपनी

बहुमूल्य सम्पत्ति दानस्वरूप भेंट की, उन उद्देश्यों की पूर्त्ति करना विश्वविद्यालय का दायित्व बनता है।

मैं आप सबों से अपील करता हूँ कि आप संस्कृत में वर्तमान समाज के लिए उपयोगी तत्त्वों को संकलित कर, उन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से जन–समान्य के बीच प्रचारित करें, तभी यह भाषा जन–जन में प्रवेश पा सकेगी। आप संस्कृत से सम्बन्धित छोटे–छोटे पाठक्रमों को तैयार कर, उनका संचालन करें। आप जन–सामान्य को बतलाएँ कि संस्कृत भाषा आज के वैज्ञानिक युग में भी प्रासंगिक है, तकनीकी सुविधओं के भी अनुकूल है तथा इसमें स्वरोजगार की भी पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं। यदि आप ऐसा कर पाते हैं, तो निश्चय ही संस्कृत भाषा अपनी प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर सकेगी और यही महाराजाधिराज के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मैं आप सबको नववर्ष की शुभकामनाएँ और बधाइयाँ देता हूँ। सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।